خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝٧٦ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ

तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से पैदा किया फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू रांधा

رَجِيْمٌ ۝٧٧ وَّ اِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْۤ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٧٨ قَالَ رَبِّ

(ला'नत किया) गया[100] और बेशक तुझ पर मेरी ला'नत है क़ियामत तक[101] बोला ऐ मेरे रब

فَاَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝٧٩ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝٨٠ اِلٰى

ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएं[102] फ़रमाया तो तू मोहलत वालों में है उस

يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝٨١ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٨٢ اِلَّا

जाने हुए वक़्त के दिन तक[103] बोला तो तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा मगर

عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ۝٨٣ قَالَ فَالْحَقُّ وَ الْحَقَّ اَقُوْلُ ۝٨٤ لَاَمْلَـَٔنَّ

जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं फ़रमाया तो सच येह है और मैं सच ही फ़रमाता हूं बेशक मैं ज़रूर जहन्नम

جَهَنَّمَ مِنْكَ وَ مِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٨٥ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ

भर दूंगा तुझ से[104] और उन में से[105] जितने तेरी पैरवी करेंगे सब से तुम फ़रमाओ मैं इस क़ुरआन पर तुम से कुछ

مِنْ اَجْرٍ وَّ مَاۤ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ۝٨٦ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٨٧

अज्र नहीं मांगता और मैं बनावट वालों में नहीं वोह तो नहीं मगर नसीह़त सारे जहान के लिये

وَ لَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ۝٨٨

और ज़रूर एक वक़्त के बा'द तुम उस की ख़बर जानोगे[106]

اٰيَاتُهَا ٧٥ — ٣٩ سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ ٥٩ — رُكُوْعَاتُهَا ٨

सूरए ज़ुमर मक्किय्या है, इस में पछत्तर आयतें और आठ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

100 : अपनी सरकशी व ना फ़रमानी व तकब्बुर के बाइ़स, फिर अल्लाह तआ़ला ने उस की सूरत बदल दी, वोह पहले ह़सीन था बद शक्ल रू सियाह कर दिया गया। और उस की नूरानिय्यत सल्ब कर दी गई। 101 : और क़ियामत के बा'द ला'नत भी और त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब भी 102 : आदम عَلَيْهِ السَّلَام और इन की ज़ुर्रिय्यत अपने फ़ना होने के बा'द जज़ा के लिये और इस से उस की मुराद येह थी कि वोह इन्सानों को गुमराह करने के लिये फ़राग़त पाए और इन से अपना बुग़्ज़ ख़ूब निकाले और मौत से बिल्कुल बच जाए क्यूं कि उठने के बा'द मौत नहीं है। 103 : या'नी नफ़्ख़ए ऊला तक जिस को ख़ल्क़ की फ़ना के लिये मुअ़य्यन फ़रमाया गया। 104 : मअ़ तेरी ज़ुर्रिय्यत के 105 : या'नी इन्सानों में से 106 : ह़ज़रते इब्ने

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ

किताब[2] उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाले की त़रफ़ से बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़[3] येह किताब

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿٢﴾ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ

ह़क़ के साथ उतारी तो अल्लाह को पूजो निरे उस के बन्दे हो कर हां ख़ालिस अल्लाह ही की

الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا وقف لازم

बन्दगी है[4] और वोह जिन्हों ने उस के सिवा और वाली बना लिये[5] कहते हैं हम तो इन्हें[6] सिर्फ़ इतनी

لِيُقَرِّبُوْنَاۤ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ

बात के लिये पूजते हैं कि येह हमें अल्लाह के पास नज़्दीक कर दें अल्लाह उन में फ़ैसला कर देगा उस बात का जिस में

يَخْتَلِفُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ

इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं[7] बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो झूटा बड़ा नाशुक्रा हो[8] अल्लाह अपने लिये

اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ

बच्चा बनाता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता[9] पाकी है उसे[10] वोही है

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ

एक अल्लाह[11] सब पर ग़ालिब उस ने आस्मान और ज़मीन ह़क़ बनाए रात को दिन

عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ

पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है[12] और उस ने चांद और सूरज को काम में लगाया हर एक एक

अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मौत के बा'द और एक क़ौल येह है कि क़ियामत के रोज़। **1 :** "सूरए ज़ुमर" मक्किय्या है सिवा आयत "قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ" और आयत "اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ" के। इस सूरत में आठ रुकूअ़ और पछत्तर आयतें और एक हज़ार एक सो बहत्तर कलिमे और चार हज़ार नव सो आठ ह़र्फ़ हैं। **2 :** किताब से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है। **3 :** ऐ सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **4 :** उस के सिवा कोई इ़बादत का मुस्तह़िक़ नहीं। **5 :** मा'बूद ठहरा लिये। मुराद उन लोगों से बुत परस्त हैं। **6 :** या'नी बुतों को **7 :** ईमानदारों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा कर **8 :** झूटा इस बात में कि बुतों को अल्लाह तआ़ला से नज़्दीक करने वाला बताए और ख़ुदा के लिये औलाद ठहराए और नाशुक्रा ऐसा कि बुतों को पूजे। **9 :** या'नी अगर बिलफ़र्ज़ अल्लाह तआ़ला के लिये औलाद मुम्किन होती वोह जिसे चाहता औलाद बनाता न कि येह तज्वीज़ कुफ़्फ़ार पर छोड़ता कि वोह जिसे चाहें ख़ुदा की औलाद क़रार दें (مَعَاذَاللّٰہ) **10 :** औलाद से और हर उस चीज़ से जो उस की शाने अक़्दस के लाइक़ नहीं। **11 :** न उस का कोई शरीक न उस की कोई औलाद **12 :** या'नी कभी रात की तारीकी से दिन के एक हिस्से को छुपाता है और कभी दिन की रोशनी से रात के हिस्से को। मुराद येह है कि कभी दिन का वक़्त घटा कर रात को बढ़ाता है कभी रात घटा कर दिन को ज़ियादा करता है और रात और दिन में से घटने वाला घटते घटते दस घन्टे का रह जाता है और बढ़ने वाला बढ़ते बढ़ते चौदह घन्टे का हो जाता है।

www.dawateislami.net

يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٥ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

ठहराई मीआ़द के लिये चलता है[13] सुनता है वोही साहिबे इ़ज़्ज़त बख़्शने वाला है उस ने तुम्हें एक

وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ

जान से बनाया[14] फिर उसी से उस का जोड़ा पैदा किया[15] और तुम्हारे लिये चौपायों से[16] आठ जोड़े

اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ

उतारे[17] तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक त़रह़ के बा'द और त़रह़[18] तीन अंधेरियों

ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦

में[19] येह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं फिर कहां फेरे जाते हो[20]

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۚ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ

अगर तुम नाशुक्री करो तो बेशक अल्लाह बे नियाज़ है तुम से[21] और अपने बन्दों की नाशुक्री उसे पसन्द नहीं और अगर

تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

शुक्र करो तो उसे तुम्हारे लिये पसन्द फ़रमाता है[22] और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ नहीं उठाएगी[23] फिर तुम्हें अपने रब ही

مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

की त़रफ़ फिरना है[24] तो वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे[25] बेशक वोह दिलों की

الصُّدُوْرِ ۝٧ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا

बात जानता है और जब आदमी को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है[26] अपने रब को पुकारता है उसी त़रफ़ झुका हुवा[27] फिर जब

خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ

अल्लाह ने उसे अपने पास से कोई ने'मत दी तो भूल जाता है जिस लिये पहले पुकारा था[28] और अल्लाह के लिये बराबर वाले

13 : या'नी क़ियामत तक वोह अपने मुक़र्रर निज़ाम पर चलते रहेंगे। 14 : या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से 15 : या'नी ह़ज़रते ह़व्वा को 16 : या'नी ऊंट, गाय, बकरी, भेड़ से 17 : या'नी पैदा किये। जोड़ों से मुराद नर और मादा हैं। 18 : या'नी नुत़्फ़ा फिर अ़लक़ह (ख़ूने बस्ता) फिर मुज़्ग़ा (गोश्त पारा) 19 : **एक** अंधेरी पेट की, **दूसरी** रह़िम की, **तीसरी** बच्चादान की। 20 : और त़रीक़े ह़क़ से दूर होते हो कि उस की इ़बादत छोड़ कर ग़ैर की इ़बादत करते हो। 21 : या'नी तुम्हारी त़ाअ़त व इ़बादत से और तुम ही उस के मोह़ताज हो, ईमान लाने में तुम्हारा ही नफ़्अ़ और काफ़िर हो जाने में तुम्हारा ही ज़रर है। 22 : कि वोह तुम्हारी काम्याबी का सबब है, इस पर तुम्हें सवाब देगा और जन्नत अ़त़ा फ़रमाएगा। 23 : या'नी कोई शख़्स दूसरे के गुनाह में माख़ूज़ न होगा। 24 : आख़िरत में 25 : दुन्या में और उस की तुम्हें जज़ा देगा। 26 : यहां आदमी से मुत़्लक़न काफ़िर या ख़ास अबू जहल या उ़त्बा बिन रबीआ़ मुराद है। 27 : उसी से फ़रियाद करता है। 28 : या'नी उस शिद्दत व तक्लीफ़ को फ़रामोश कर देता है जिस के लिये अल्लाह से फ़रियाद की थी।

www.dawateislami.net

اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ

ठहराने लगता है[29] ताकि उस की राह से बहका दे तुम फ़रमाओ[30] थोड़े दिन अपने कुफ़्र के साथ बरत ले[31] बेशक तू

اَصْحٰبِ النَّارِ ۝٨ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ

दोज़ख़ियों में है क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में[32] आख़िरत

الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَ

से डरता और अपने रब की रहमत की आस लगाए[33] क्या वोह ना फ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٩ ع قُلْ يٰعِبَادِ ع ١ ٩ ١٥

अन्जान नसीहत तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं तुम फ़रमाओ ऐ मेरे बन्दो

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ

जो ईमान लाए अपने रब से डरो जिन्हों ने भलाई की[34] उन के लिये इस दुन्या में भलाई है[35]

وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝١٠

और **अल्लाह** की ज़मीन वसीअ़ है[36] साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती[37]

29 : या'नी हाजत बरआरी के बा'द फिर बुत परस्ती में मुब्तला हो जाता है। **30 :** ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! इस काफ़िर से **31 :** और दुन्या की ज़िन्दगी के दिन पूरे कर ले **32 शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत हज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की शान में नाज़िल हुई और हज़रते इब्ने उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के हक़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह है कि हज़रते इब्ने मस्ऊ़द और हज़रते अ़म्मार और हज़रते सलमान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के हक़ में नाज़िल हुई। **फ़ाएदा :** इस आयत से साबित हुवा कि रात के नवाफ़िल व इ़बादत दिन के नवाफ़िल से अफ़्ज़ल हैं इस की **एक** वज्ह तो येह है कि रात का अ़मल पोशीदा होता है इस लिये वोह रिया से बहुत दूर होता है। **दूसरे** येह कि दुन्या के कारोबार बन्द होते हैं इस लिये क़ल्ब ब निस्बत दिन के बहुत फ़ारिग़ होता है और तवज्जोह इलल्लाह और ख़ुशूअ़ दिन से ज़ियादा रात में मुयस्सर आता है। **तीसरे** रात चूंकि राहत व ख़्वाब का वक़्त होता है इस लिये इस में बेदार रहना नफ़्स को बहुत मशक़्क़त व तअ़ब में डालता है तो सवाब भी इस का ज़ियादा होगा। **33 :** इस से साबित हुवा कि मोमिन के लिये लाज़िम है कि वोह बैनल ख़ौफ़ व रजा (ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान) हो, अपने अ़मल की तक़्सीर पर नज़र कर के अ़ज़ाब से डरता रहे और **अल्लाह** तआ़ला की रहमत का उम्मीद वार रहे, दुन्या में बिल्कुल बे ख़ौफ़ होना या **अल्लाह** तआ़ला की रहमत से मुत्लक़न मायूस होना, येह दोनों क़ुरआने करीम में कुफ़्फ़ार की हालतें बताई गई हैं قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: "فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ" وَقَالَ تَعَالٰى: "لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ" **34 :** ताअ़त बजा लाए और अच्छे अ़मल किये। **35 :** या'नी सिह्हत व आ़फ़िय्यत **36 :** इस में हिजरत की तरग़ीब है कि जिस शह्र में मआ़सी की कसरत हो और वहां रहने से आदमी को अपनी दीनदारी पर क़ाइम रहना दुश्वार हो जाए चाहिये कि उस जगह को छोड़ दे और वहां से हिजरत कर जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुहाजिरीने ह़ब्शा के हक़ में नाज़िल हुई और येह भी कहा गया है कि हज़रते जा'फ़र बिन अबी तालिब और उन के हमराहियों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मुसीबतों और बलाओं पर सब्र किया और हिजरत की और अपने दीन पर क़ाइम रहे इस को छोड़ना गवारा न किया। **37 :** हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़्न किया जाएगा सिवाए सब्र करने वालों के कि उन्हें बे अन्दाज़ा और बे हिसाब दिया जाएगा और येह भी मरवी है कि "अस्ह़ाबे मुसीबत व बला" हाज़िर किये जाएंगे न उन के लिये मीज़ान क़ाइम की जाए न उन के लिये दफ़्तर खोले जाएं, उन पर अज्रो सवाब की बे हिसाब बारिश होगी यहां तक कि दुन्या में आ़फ़िय्यत की ज़िन्दगी बसर करने वाले उन्हें देख कर आरज़ू करेंगे कि काश वोह अहले मुसीबत में से होते और उन के जिस्म क़ैंचियों से काटे गए होते कि आज येह सब्र का अज्र पाते।

www.dawateislami.net

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اُمِرْتُ لِاَنْ

तुम फ़रमाओ[38] मुझे हुक्म है कि अल्लाह को पूजूं निरा उस का बन्दा हो कर और मुझे हुक्म है

اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲﴾ قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ

कि मैं सब से पहले गरदन रखूं[39] तुम फ़रमाओ बिलफ़र्ज़ अगर मुझ से ना फ़रमानी हो जाए तो मुझे भी अपने रब से एक

یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْ ﴿۱۴﴾ فَاعْبُدُوْا مَا

बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[40] तुम फ़रमाओ मैं अल्लाह ही को पूजता हूं निरा उस का बन्दा हो कर तो तुम उस के

شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ

सिवा जिसे चाहो पूजो[41] तुम फ़रमाओ पूरी हार उन्हें जो अपनी जान और अपने

اَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ

घर वाले क़ियामत के दिन हार बैठे[42] हां हां येही खुली हार है उन के

فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ

ऊपर आग के पहाड़ हैं और उन के नीचे पहाड़[43] इस से अल्लाह डराता है अपने

عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾ وَ الَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ یَّعْبُدُوْهَا

बन्दों को[44] ऐ मेरे बन्दो तुम मुझ से डरो[45] और वोह जो बुतों की पूजा से बचे

وَ اَنَابُوْۤا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰی ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ

और अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ हुए उन्हीं के लिये ख़ुश ख़बरी है तो ख़ुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को जो कान लगा कर

الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمْ

बात सुनें फिर उस के बेहतर पर चलें[46] येह हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई और येह हैं जिन को

38 : ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **39 :** और अहले त़ाअ़त व इख़्लास में मुक़द्दम व साबिक़ होउं। अल्लाह तआ़ला ने पहले इख़्लास का हुक्म दिया जो अ़मले क़ल्ब है, फिर इत़ाअ़त या'नी आ'माले जवारेह़ का। चूं कि अह़कामे शरइ़य्या रसूल से ह़ासिल होते हैं, वोही उन के पहुंचाने वाले हैं तो वोह उन के शुरूअ़ करने में सब से मुक़द्दम और अव्वल हुए। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को येह हुक्म दे कर तम्बीह की, कि दूसरों पर इस की पाबन्दी निहायत ज़रूरी है और दूसरों की तरग़ीब के लिये नबी عَلَيْهِ السَّلَام को येह हुक्म दिया गया **40 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि आप अपनी क़ौम के सरदारों और अपने रिश्तेदारों को नहीं देखते जो लात व उ़ज़्ज़ा की परस्तिश करते हैं, उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **41 :** ब त़रीक़े तहदीद व तौबीख़ फ़रमाया। **42 :** या'नी गुमराही इख़्तियार कर के हमेशा के लिये मुस्तह़िक़्क़े जहन्नम हो गए और जन्नत की उन ने'मतों से मह़रूम हो गए जो ईमान लाने पर उन्हें मिलतीं। **43 :** या'नी हर त़रफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। **44 :** कि ईमान लाएं और मम्नूआ़त से बचें। **45 :** वोह काम न करो जो मेरी नाराज़ी का सबब हो। **46 :** जिस में उन की बेह़बूद हो।

www.dawateislami.net

أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾ أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۖ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ

अक़्ल है[47] तो क्या वोह जिस पर अ़ज़ाब की बात साबित हो चुकी नजात वालों के बराबर हो जाएगा तो क्या तुम हिदायत दे कर

مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِنْ فَوْقِهَا

आग के मुस्तह़िक़ को बचा लोगे[48] लेकिन जो अपने रब से डरे[49] उन के लिये बालाख़ाने हैं उन पर

غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ

बालाख़ाने बने[50] उन के नीचे नहरें बहें **अल्लाह** का वा'दा **अल्लाह** वा'दा ख़िलाफ़

الْمِيعَادَ ﴿٢٠﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي

नहीं करता क्या तू ने न देखा कि **अल्लाह** ने आस्मान से पानी उतारा फिर उस से ज़मीन में

الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ

चश्मे बनाए फिर उस से खेती निकालता है कई रंगत की[51] फिर सूख जाती है तो तू देखे कि वोह[52]

مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾ ع ٢ ١٦

पीली पड़ गई फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर देता है बेशक इस में ध्यान की बात है अ़क़्ल मन्दों को[53]

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ

तो क्या वोह जिस का सीना **अल्लाह** ने इस्लाम के लिये खोल दिया[54] तो वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है[55] उस जैसा हो जाएगा

لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٢﴾ اللَّهُ نَزَّلَ

जो संगदिल है तो ख़राबी है उन की जिन के दिल यादे ख़ुदा की त़रफ़ से सख़्त हो गए हैं[56] वोह खुली गुमराही में हैं **अल्लाह** ने उतारी

47 **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ईमान लाए तो आप के पास ह़ज़रते उ़स्मान और अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने औ़फ़ और त़ल्ह़ा व ज़ुबैर व सा'द बिन अबी वक़्क़ास व सईद बिन ज़ैद आए और उन से ह़ाल दरयाफ़्त किया, उन्हों ने अपने ईमान की ख़बर दी, येह ह़ज़रात भी सुन कर ईमान ले आए, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई ''فَبَشِّرْ عِبَادِ......الآية''। 48 : जो अज़ली बद बख़्त और इ़ल्मे इलाही में जहन्नमी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि मुराद इस से अबू लहब और उस के लड़के हैं। 49 : और उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की फ़रमां बरदारी की 50 : या'नी जन्नत के मनाज़िले रफ़ीआ़ जिन के ऊपर और अरफ़अ़ मनाज़िल हैं। 51 : ज़र्द, सब्ज़, सुर्ख़, सफ़ेद, क़िस्म क़िस्म की गेहूं जव और त़रह़ त़रह़ के ग़ल्ले। 52 : सर सब्ज़ो शादाब होने के बा'द 53 : जो इस से **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत व क़ुदरत पर दलीलें क़ाइम करते हैं। 54 : और उस को क़बूले ह़क़ की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई। 55 : या'नी यक़ीन व हिदायत पर। **ह़दीस :** रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जब येह आयत तिलावत फ़रमाई तो सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) सीने का खुलना किस त़रह़ होता है? फ़रमाया कि जब नूर क़ल्ब में दाख़िल होता है तो वोह खुलता है और उस में वुस्अ़त होती है। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : इस की क्या अ़लामत है? फ़रमाया : दारुल ख़ुलूद (हमेशा रहने वाले घर जन्नत) की त़रफ़ मुतवज्जेह होना और दारुल ग़ुरूर (फ़ना होने वाले घर या'नी दुन्या से) दूर रहना और मौत के लिये उस के आने से क़ब्ल आमादा होना। 56 : नफ़्स जब ख़बीस होता है तो क़बूले ह़क़ से उस को बहुत दूरी हो जाती है और ज़िक्रुल्लाह के सुनने से उस की सख़्ती और कदूरत बढ़ती है, जैसे कि आफ़्ताब की गरमी से मोम नर्म होता है और नमक सख़्त होता है ऐसे ही ज़िक्रुल्लाह से मोमिनीन के क़ुलूब नर्म

www.dawateislami.net

اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ

सब से अच्छी किताब[57] कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है[58] दोहरे बयान वाली[59] इस से बाल खड़े होते हैं उन के बदन पर जो

يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल नर्म पड़ते हैं यादे ख़ुदा की त़रफ़ रग़बत में[60] येह

هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

अल्लाह की हिदायत है राह दिखाए उसे जिसे चाहे और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ

तो क्या वोह जो क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब की ढाल न पाएगा अपने चेहरे के सिवा[61] नजात वाले की त़रह़ हो जाएगा[62]

ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ

और ज़ालिमों से फ़रमाया जाएगा अपना कमाया चखो[63] इन से अगलों ने झुटलाया[64] तो उन्हें

الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ

अ़ज़ाब आया जहां से उन्हें ख़बर न थी[65] और अल्लाह ने उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी में रुस्वाई का मज़ा

الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا

وقف لازم

चखाया[66] और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से बड़ा क्या अच्छा था अगर वोह जानते[67] और बेशक हम ने

لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ ۚ قُرْاٰنًا

लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की कहावत बयान फ़रमाई कि किसी त़रह़ उन्हें ध्यान हो[68] अ़रबी ज़बान

होते हैं और काफ़िरों के दिलों की सख़्ती और बढ़ती है। **फ़ाएदा :** इस आयत से उन लोगों को इ़ब्रत पकड़ना चाहिये जिन्हों ने ज़िक़्रुल्लाह को रोकना अपना शिआ़र बना लिया है, वो सूफ़ियों के ज़िक्र को भी मन्अ़ करते हैं, नमाज़ों के बा'द ज़िक़्रुल्लाह करने वालों को भी रोकते और मन्अ़ करते हैं, ईसाले सवाब के लिये क़ुरआने करीम और कलिमा पढ़ने वालों को भी बिद्अ़ती बताते हैं और इन ज़िक्र की महफ़िलों से निहायत घबराते और भागते हैं। अल्लाह तआ़ला हिदायत दे। **57 :** क़ुरआन शरीफ़, जो इ़बारत में ऐसा फ़सीह़ो बलीग़ कि कोई कलाम इस से कुछ निस्बत ही नहीं रख सकता, मज़मून निहायत दिल पज़ीर, बा वुजूदे कि न नज़्म है न शे'र निराले ही उस्लूब पर है और मा'ना में ऐसा बुलन्द मर्तबा कि तमाम उ़लूम का जामेअ़ और मा'रिफ़ते इलाही जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत का रहनुमा। **58 :** हुस्नो ख़ूबी में **59 :** कि इस में वा'दा के साथ वईद और अम्र के साथ नही और अख़्बार के साथ अह़काम हैं। **60 :** ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह औलियाउल्लाह की सिफ़त है कि ज़िक्रे इलाही से उन के बाल खड़े होते जिस्म लरज़ते हैं और दिल चैन पाते हैं। **61 :** वोह काफ़िर है जिस के हाथ गरदन के साथ मिला कर बांध दिये जाएंगे और उस की गरदन में गन्धक का एक जलता हुवा पहाड़ पड़ा होगा जो उस के चेहरे को भूने डालता होगा, इस ह़ाल से औंधा कर के आतशे जहन्नम में गिराया जाएगा। **62 :** या'नी उस मोमिन की त़रह़ जो अ़ज़ाब से मामून व महफ़ूज़ हो। **63 :** या'नी दुन्या में जो कुफ़्र व सरकशी इख़्तियार की थी अब उस का वबाल व अ़ज़ाब बरदाश्त करो। **64 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से पहले काफ़िरों ने रसूलों को झुटलाया **65 :** अ़ज़ाब आने का ख़त़रा भी न था, ग़फ़्लत में पड़े हुए थे। **66 :** किसी क़ौम की सूरतें मस्ख़ कीं किसी को ज़मीन में धंसाया। **67 :** और ईमान ले आते तक्ज़ीब न करते। **68 :** और वोह नसीह़त क़बूल करें।

www.dawateislami.net

عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا

का क़ुरआन[69] जिस में अस्लन कजी नहीं[70] कि कहीं वोह डरें[71] अल्लाह एक मिसाल बयान फ़रमाता है[72] एक ग़ुलाम

فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ

में कई बद ख़ू आक़ा शरीक और एक निरे एक मौला का क्या इन दोनों का हाल

مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

एक सा है[73] सब ख़ूबियां अल्लाह को[74] बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते[75] बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और इन को

مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾ ع ٢ ١٧

भी मरना है[76] फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे[77]

69 : ऐसा फ़सीह जिस ने फ़ुसहा व बुलग़ा को आजिज़ कर दिया **70 :** या'नी तनाक़ुज़ व इख़्तिलाफ़ से पाक। **71 :** और कुफ़्र व तक्ज़ीब से बाज़ आएं। **72 :** मुश्रिक और मुवह्हिद की **73 :** या'नी एक जमाअ़त का ग़ुलाम निहायत परेशान होता है कि हर एक आक़ा उसे अपनी त़रफ़ खींचता है और अपने अपने काम बताता है, वोह ह़ैरान है कि किस का हुक्म बजा लाए और किस त़रह़ तमाम आक़ाओं को राज़ी करे और ख़ुद उस ग़ुलाम को जब कोई ह़ाजत व ज़रूरत पेश हो तो किस आक़ा से कहे, ब ख़िलाफ़ उस ग़ुलाम के जिस का एक ही आक़ा हो वोह उस की ख़िदमत कर के उसे राज़ी कर सकता है और जब कोई ह़ाजत पेश आए तो उसी से अ़र्ज़ कर सकता है, उस को कोई परेशानी पेश नहीं आती। येह ह़ाल मोमिन का है जो एक मालिक का बन्दा है, उसी की इ़बादत करता है और मुश्रिक जमाअ़त के ग़ुलाम की त़रह़ है कि उस ने बहुत से मा'बूद क़रार दे दिये हैं। **74 :** जो अकेला है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। **75 :** कि उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं। **76 :** इस में कुफ़्फ़ार का रद है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की वफ़ात का इन्तिज़ार किया करते थे, उन्हें फ़रमाया गया कि ख़ुद मरने वाले हो कर दूसरे की मौत का इन्तिज़ार करना ह़माक़त है, कुफ़्फ़ार तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और अम्बिया की मौत एक आन के लिये होती है फिर उन्हें ह़यात अ़त़ा फ़रमाई जाती है। इस पर बहुत सी शरई बुरहानें क़ाइम हैं। **77 :** अम्बिया उम्मत पर हुज्जत क़ाइम करेंगे कि उन्हों ने रिसालत की तब्लीग़ की और दीन की दा'वत देने में जोह्दे बलीग़ सर्फ़ फ़रमाई और काफ़िर बे फ़ाएदा मा'ज़िरतें पेश करेंगे। येह भी कहा गया है कि मुराद इख़्तिसामे आ़म है कि लोग दुन्यवी हुक़ूक़ में मुख़ासमा करेंगे और हर एक अपना ह़क़ त़लब करेगा।

www.dawateislami.net

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَ كَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[78] और हक़ को झुटलाए[79] जब उस के पास आए

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ

क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए[80] और वोह जिन्हों ने उन की तस्दीक़

بِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۳۳﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا

की[81] येही डर वाले हैं उन के लिये है जो वोह चाहें अपने रब के पास नेकों का येही

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۴﴾ۙ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ

सिला है ताकि अल्लाह उन से उतार दे बुरे से बुरा काम जो उन्हों ने किया और उन्हें उन के सवाब का

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۵﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ

सिला दे अच्छे से अच्छे काम पर[82] जो वोह करते थे क्या अल्लाह अपने बन्दों को काफ़ी नहीं[83]

وَ يُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ

और तुम्हें डराते हैं उस के सिवा औरों से[84] और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस की कोई हिदायत करने

هَادٍ ﴿۳۶﴾ۚ وَ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي

वाला नहीं और जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई बहकाने वाला नहीं क्या अल्लाह इज़्ज़त वाला बदला लेने

انْتِقَامٍ ﴿۳۷﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ

वाला नहीं ?[85] और अगर तुम उन से पूछो आस्मान और ज़मीन किस ने बनाए ? तो ज़रूर कहेंगे

اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ

अल्लाह ने[86] तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[87] अगर अल्लाह मुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाना चाहे[88]

78 : और उस के लिये शरीक और औलाद क़रार दे 79 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ को या रसूल عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत को। 80 : या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जो तौहीदे इलाही लाए। 81 : या'नी हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه या तमाम मोमिनीन 82 : या'नी उन की बदियों पर गिरिफ़्त न करे और नेकियों की बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए। 83 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये और एक क़िराअत में "عِبَادَهٗ" भी आया है इस सूरत में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मुराद हैं जिन के साथ उन की क़ौमों ने ईज़ा रसानी के इरादे किये अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रखा और उन की किफ़ायत फ़रमाई। 84 : या'नी बुतों से। **वाक़िआ़** येह था कि कुफ़्फ़ारे अ़रब ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को डराना चाहा और आप से कहा कि आप हमारे मा'बूदों या'नी बुतों की बुराई बयान करने से बाज़ आइये वरना वोह आप को नुक़्सान पहुंचाएंगे, हलाक कर देंगे या अ़क़्ल को फ़ासिद कर देंगे। 85 : बेशक वोह अपने दुश्मनों से इन्तिक़ाम लेता है। 86 : या'नी येह मुश्रिकीन ख़ुदाए क़ादिर, अ़लीम, हकीम की हस्ती के तो मुक़िर (मानने वाले) हैं और येह बात तमाम ख़ल्क़ के नज़्दीक मुसल्लम है और ख़ल्क़ की फ़ितरत इस की शाहिद है और जो शख़्स आस्मानो ज़मीन के अ़जाइब में नज़र करे उस को यक़ीनी

www.dawateislami.net

هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِیْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ

तो क्या वोह उस की भेजी तक्लीफ़ टाल देंगे या वोह मुझ पर मेहर (रह़्म) फ़रमाना चाहे तो क्या वोह उस की मेहर (रह़्म) को रोक

رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِیَ اللّٰهُ ؕ عَلَیْهِ یَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ یٰقَوْمِ

रखेंगे[89] तुम फ़रमाओ अल्लाह मुझे बस है[90] भरोसे वाले उस पर भरोसा करें तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम

اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّیْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ۙ مَنْ یَّاْتِیْهِ

अपनी जगह काम किये जाओ[91] मैं अपना काम करता हूं[92] तो आगे जान जाओगे किस पर आता है

عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَ یَحِلُّ عَلَیْهِ عَذَابٌ مُّقِیْمٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ

वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करेगा[93] और किस पर उतरता है अ़ज़ाब कि रह पड़ेगा[94] बेशक हम ने तुम पर येह

الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

किताब लोगों की हिदायत को ह़क़ के साथ उतारी[95] तो जिस ने राह पाई तो अपने भले को[96] और जो बहका वोह

یَضِلُّ عَلَیْهَا ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَیْهِمْ بِوَكِیْلٍ ﴿۴۱﴾ اَللّٰهُ یَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ ع ۱۰ ۴

अपने ही बुरे को बहका[97] और तुम कुछ उन के ज़िम्मेदार नहीं[98] अल्लाह जानों को वफ़ात देता है

حِیْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ فَیُمْسِكُ الَّتِیْ قَضٰى عَلَیْهَا

उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक

الْمَوْتَ وَ یُرْسِلُ الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ

रखता है[99] और दूसरी[100] एक मीआ़द मुक़र्रर तक छोड़ देता है[101] बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं

तौ़र पर मा'लूम हो जाता है कि येह मौजूदात एक क़ादिर ह़कीम की बनाई हुई हैं। अल्लाह तआ़ला अपने नबी عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म देता है कि आप उन मुश्रिकीन पर ह़ुज्जत क़ाइम कीजिये चुनान्चे फ़रमाता है : 87 : या'नी बुतों को। येह भी तो देखो कि वोह कुछ भी क़ुदरत रखते हैं और किसी काम भी आ सकते हैं। 88 : किसी त़रह़ की मरज़ की या क़ह़त़ की या नादारी की या और कोई 89 : जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुश्रिकीन से येह सुवाल फ़रमाया तो वोह ला जवाब हुए और साकित रह गए, अब ह़ुज्जत तमाम हो गई और उन के सुकूती इक़रार से साबित हो गया कि बुत महज़ बे क़ुदरत हैं, न कोई नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं न कुछ ज़रर, इन की इबादत करना निहायत ही जहालत है। इस लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया 90 : मेरा उसी पर भरोसा है और जिस का अल्लाह तआ़ला पर भरोसा हो वोह किसी से भी नहीं डरता, तुम जो मुझे बुत जैसी बे क़ुदरत व बे इख़्तियार चीज़ों से डराते हो येह तुम्हारी निहायत ही बे वुक़ूफ़ी व जहालत है। 91 : और जो जो मक्र व ह़ीले तुम से हो सकें, मेरी अ़दावत में सब ही कर गुज़रो। 92 : जिस पर मामूर हूं या'नी दीन का क़ाइम करना और अल्लाह तआ़ला मेरा मुई़न व नासिर है और उसी पर मेरा भरोसा है। 93 : चुनान्चे, रोज़े बद्र वोह रुस्वाई के अ़ज़ाब में मुब्तला हुए। 94 : या'नी दाइम होगा और वोह अ़ज़ाबे जहन्नम है। 95 : ताकि इस से हिदायत ह़ासिल करें। 96 : कि इस राहयाबी का नफ़्अ़ वोही पाएगा। 97 : उस की गुमराही का ज़रर और वबाल उसी पर पड़ेगा। 98 : तुम से उन की तक़्सीर का मुआख़ज़ा न होगा। 99 : या'नी उस जान को उस के जिस्म की त़रफ़ वापस नहीं करता 100 : जिस की मौत मुक़द्दर नहीं फ़रमाई उस को 101 : या'नी उस की मौत के वक़्त तक।

www.dawateislami.net

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلْ اَوَلَوْ

सोचने वालों के लिये[102] क्या उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिल कुछ सिफ़ारिशी बना रखे हैं[103] तुम फ़रमाओ क्या अगर्चे

كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴۳﴾ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ؕ

वोह किसी चीज़ के मालिक न हों[104] और न अ़क़्ल रखें तुम फ़रमाओ शफ़ाअ़त तो सब अल्लाह के हाथ में है[105]

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ اِذَا ذُكِرَ

उसी के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही फिर तुम्हें उसी की त़रफ़ पलटना है[106] और जब एक

اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَ اِذَا

अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उन के जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते[107] और जब

ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ

उस के सिवा औरों का ज़िक्र होता है[108] जभी वोह ख़ुशियां मनाते हैं तुम अ़र्ज़ करो ऐ अल्लाह आस्मानों

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ

और ज़मीन के पैदा करने वाले निहां (पोशीदा) और इ़यां (ज़ाहिर) के जानने वाले तू अपने बन्दों में फ़ैसला

عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ لَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي

फ़रमाएगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ रखते थे[109] और अगर ज़ालिमों के लिये होता जो कुछ

الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ

ज़मीन में है सब और इस के साथ उस जैसा[110] तो येह सब छुड़ाई में देते रोज़े क़ियामत के बड़े

الْقِيٰمَةِ ؕ وَ بَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ بَدَا لَهُمْ

अ़ज़ाब से[111] और उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी[112] और उन पर अपनी

102 : जो सोचें और समझें कि जो इस पर क़ादिर है वोह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **103 :** या'नी बुत जिन की निस्बत वोह कहते थे कि येह अल्लाह के पास हमारे शफ़ीअ़ हैं। **104 :** न शफ़ाअ़त के न और किसी चीज़ के **105 :** जो उस का माज़ून (इजाज़त दिया गया) हो वोही शफ़ाअ़त कर सकता है और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहे शफ़ाअ़त का इ़ज़्न देता है, बुतों को उस ने शफ़ीअ़ नहीं बनाया और इ़बादत तो ख़ुदा के सिवा किसी की भी जाइ़ज़ नहीं शफ़ीअ़ हो या न हो। **106 :** आख़िरत में। **107 :** और वोह बहुत तंगदिल और परेशान होते हैं और ना गवारी का असर उन के चेहरों पर ज़ाहिर हो जाता है। **108 :** या'नी बुतों का **109 :** या'नी अम्रे दीन में। इब्ने मुसय्यब से मन्क़ूल है कि येह आयत पढ़ कर जो दुआ़ मांगी जाए क़बूल होती है। **110 :** या'नी अगर बिलफ़र्ज़ काफ़िर तमाम दुन्या के अम्वाल व ज़ख़ाइ़र के मालिक होते और इतना ही और भी उन के मिल्क में होता **111 :** कि किसी त़रह़ येह अम्वाल दे कर उन्हें इस अ़ज़ाबे अ़ज़ीम से रिहाई मिल जाए। **112 :** या'नी ऐसे ऐसे अ़ज़ाबे शदीद जिन का उन्हें ख़याल भी न था, और इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि वोह गुमान करते होंगे कि उन के पास नेकियां हैं और जब नामए आ'माल खुलेंगे तो बदियां ज़ाहिर होंगी।

www.dawateislami.net

سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۸﴾ فَاِذَا مَسَّ

कमाई हुई बुराइयां खुल गईं[113] और उन पर आ पड़ा वोह जिस की हंसी बनाते थे[114] फिर जब आदमी

الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ

को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो हमें बुलाता है फिर जब उसे हम अपने पास से कोई ने'मत अ़ता फ़रमाएं कहता है येह तो मुझे एक इ़ल्म की

عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۹﴾ قَدْ قَالَهَا

बदौलत मिली है[115] बल्कि वोह तो आज़्माइश है[116] मगर उन में बहुतों को इ़ल्म नहीं[117] उन से अगले

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۵۰﴾ فَاَصَابَهُمْ

भी ऐसे ही कह चुके[118] तो उन का कमाया उन के कुछ काम न आया तो उन पर पड़ गई

سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ

उन की कमाइयों की बुराइयां[119] और वोह जो उन में ज़ालिम हैं अ़न्क़रीब उन पर पड़ेंगी उन की

مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۵۱﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ

कमाइयों की बुराइयां और वोह क़ाबू से नहीं निकल सकते[120] क्या उन्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह रोज़ी कुशादा

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ ع ۵ ۲

करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं ईमान वालों के लिये

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ

तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की[121] अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद

اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۳﴾ وَ

न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है[122] बेशक वोही बख़्शने वाला मेह़रबान है और

113 : जो उन्हों ने दुन्या में की थीं, अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक करना और उस के दोस्तों पर ज़ुल्म करना वग़ैरा। **114 :** या'नी नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़बर देने पर, वोह जिस अ़ज़ाब की हंसी बनाया करते थे वोह नाज़िल हो गया और उस में घिर गए। **115 :** या'नी मैं मआ़श का जो इ़ल्म रखता हूं उस के ज़रीए़ से मैं ने येह दौलत कमाई जैसा कि क़ारून ने कहा था। **116 :** या'नी येह ने'मत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आज़्माइश व इम्तिहान है कि बन्दा इस पर शुक्र करता है या नाशुक्री। **117 :** कि येह ने'मत व अ़ता इस्तिद्राज (मोहलत) व इम्तिहान है। **118 :** या'नी येह बात क़ारून ने भी कही थी कि येह दौलत मुझे अपने इ़ल्म की बदौलत मिली और उस की क़ौम उस की इस बेहूदा गोई पर राज़ी रही थी तो वोह भी क़ाइलों में शुमार हुई। **119 :** या'नी जो बदियां उन्हों ने की थीं उन की सज़ाएं। **120 :** चुनान्चे वोह सात बरस क़ह़त़ की मुसीबत में मुब्तला रखे गए। **121 :** गुनाहों और मा'सियतों में मुब्तला हो कर। **122 :** उस के जो कुफ़्र से बाज़ आए। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन में से चन्द आदमी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने हुज़ूर से अ़र्ज़ किया कि आप का दीन तो बेशक ह़क़ और सच्चा है लेकिन हम ने बड़े बड़े गुनाह किये हैं बहुत सी मा'सियतों में मुब्तला रहे हैं क्या किसी त़रह़

www.dawateislami.net

اَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا

अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ लाओ[123] और उस के हुज़ूर गरदन रखो[124] क़ब्ल इस के कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी

تُنْصَرُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ

मदद न हो और उस की पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़ उतारी गई[125] क़ब्ल इस के

اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿۵۵﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ

कि अ़ज़ाब तुम पर अचानक आ जाए और तुम्हें ख़बर न हो[126] कि कहीं कोई जान येह न कहे

يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿۵۶﴾

कि हाए अफ़्सोस उन तक़्सीरों पर जो मैं ने अल्लाह के बारे में कीं[127] और बेशक मैं हंसी बनाया करता था[128]

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۵۷﴾ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ

या कहे अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता या कहे जब

تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ بَلٰى قَدْ

अ़ज़ाब देखे किसी तरह़ मुझे वापसी मिले[129] कि मैं नेकियां करूं[130] हां क्यूं नहीं बेशक

جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۹﴾ وَ

तेरे पास मेरी आयतें आईं तो तू ने उन्हें झुटलाया और तकब्बुर किया और तू काफ़िर था[131] और

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ

क़ियामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्हों ने अल्लाह पर झूट बांधा[132] कि उन के मुंह काले हैं

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۶۰﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا

क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम में नहीं[133] और अल्लाह बचाएगा परहेज़ गारों को

हमारे वोह गुनाह मुआ़फ़ हो सकते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **123 :** ताइब हो कर। **124 :** और इख़्लास के साथ ता़अ़त बजा लाओ। **125 :** वोह अल्लाह की किताब क़ुरआने मजीद है। **126 :** तुम ग़फ़्लत में पड़े रहो। इस लिये चाहिये कि पहले से होशियार रहो। **127 :** कि उस की इ़ताअ़त बजा न लाया और उस के ह़क़ को न पहचाना और उस की रिज़ाजूई की फ़िक्र न की। **128 :** अल्लाह तआ़ला के दीन की और उस की किताब की। **129 :** और दोबारा दुन्या में जाने का मौक़अ़ दिया जाए **130 :** इन बातिल उ़ज़्रों का जवाब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से वोह है जो अगली आयत में इर्शाद होता है। **131 :** या'नी तेरे पास क़ुरआने पाक पहुंचा और ह़क़ व बातिल की राहें वाज़ेह़ कर दी गईं और तुझे ह़क़ व हिदायत इख़्तियार करने की क़ुदरत दी गई, बा वुजूद इस के तू ने ह़क़ को छोड़ा और उस को क़बूल करने से तकब्बुर किया गुमराही इख़्तियार की, जो ह़ुक्म दिया गया उस की ज़िद व मुख़ालफ़त की, तो अब तेरा येह कहना ग़लत़ है कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता और तेरे तमाम उ़ज़्र झूटे हैं। **132 :** और शाने इलाही में ऐसी बात कही जो उस के लाइक़ नहीं, उस के लिये शरीक तज्वीज़ किये, औलाद बताई, उस की सिफ़त का इन्कार किया, इस का नतीजा येह है **133 :** जो बराहे तकब्बुर ईमान न लाए।

www.dawateislami.net

بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ

उन की नजात की जगह[134] न उन्हें अ़ज़ाब छूए और न उन्हें ग़म हो **अल्लाह** हर चीज़ का पैदा करने

شَيْءٍ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ

वाला है और वोह हर चीज़ का मुख़्तार है उसी के लिये हैं आस्मानों और

الْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع قُلْ

ज़मीन की कुन्जियां[135] और जिन्हों ने **अल्लाह** की आयतों का इन्कार किया वोही नुक़्सान में हैं तुम फ़रमाओ[136]

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَ

तो क्या **अल्लाह** के सिवा दूसरे के पूजने को मुझ से कहते हो ऐ जाहिलो[137] और बेशक वह्य की गई तुम्हारी त़रफ़ और

اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ

तुम से अगलों की त़रफ़ कि ऐ सुनने वाले अगर तू ने **अल्लाह** का शरीक किया तो ज़रूर तेरा सब किया धरा अकारत जाएगा और ज़रूर तू

مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا

हार में रहेगा बल्कि **अल्लाह** ही की बन्दगी कर और शुक्र वालों से हो[138] और उन्हों ने **अल्लाह** की क़द्र

اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ

न की जैसा कि उस का ह़क़ था[139] और वोह क़ियामत के दिन सब ज़मीनों को समेट देगा और उस की क़ुदरत से

مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ

सब आस्मान लपेट दिये जाएंगे[140] और उन के शिर्क से पाक और बरतर है और सूर फूंका जाएगा

134 : उन्हें जन्नत अ़त़ा फ़रमाएगा। **135 :** या'नी ख़ज़ाइने रह़मत व रिज़्क़ व बारिश वग़ैरा की कुन्जियां उसी के पास हैं, वोही इन का मालिक है। येह भी कहा गया है कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से इस आयत की तफ़्सीर दरयाफ़्त की तो फ़रमाया कि मक़ालीदे समावातो अर्द़ (आस्मान व ज़मीन की कुन्जियां) येह हैं : ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَهُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِي وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ'' मुराद येह है कि इन कलिमात में **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद व तम्जीद है, येह आस्मान व ज़मीन की भलाइयों की कुन्जियां हैं जिस मोमिन ने येह कलिमे पढ़े दारैन की बेहतरी पाएगा। **136 :** ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! इन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से जो आप को अपने दीन या'नी बुत परस्ती की त़रफ़ बुलाते हैं। **137 :** जाहिल इस वासित़े फ़रमाया कि उन्हें इतना भी मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और कोई मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं बा वुजूदे कि इस पर क़त़ई दलीलें क़ाइम हैं। **138 :** जो ने'मतें **अल्लाह** तआ़ला ने तुझ को अ़त़ा फ़रमाईं उस की त़ाअ़त बजा ला कर उन की शुक्र गुज़ारी कर। **139 :** जभी तो शिर्क में मुब्तला हुए अगर अ़ज़मते इलाही से वाक़िफ़ होते और उस का मर्तबा पहचानते तो ऐसा क्यूं करते। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मतो जलाल का बयान है। **140 :** ह़दीसे बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला आस्मानों को लपेट कर अपने दस्ते क़ुदरत में लेगा, फिर फ़रमाएगा : मैं हूं बादशाह, कहां हैं जब्बार, कहां हैं मुतकब्बिर, मुल्क व ह़ुकूमत के दा'वेदार, फिर ज़मीनों को लपेट कर अपने दूसरे दस्ते मुबारक में लेगा और येही फ़रमाएगा, फिर फ़रमाएगा : मैं हूं बादशाह कहां हैं ज़मीन के बादशाह।

فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ

तो बेहोश हो जाएंगे[141] जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में मगर जिसे अल्लाह चाहे[142] फिर

نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ

वोह दोबारा फूंका जाएगा[143] जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे[144] और ज़मीन जगमगा उठेगी[145]

بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ

अपने रब के नूर से[146] और रखी जाएगी किताब[147] और लाए जाएंगे अम्बिया और येह नबी और इस की उम्मत कि उन पर गवाह होंगे[148] और लोगों में

بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَ

सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा और हर जान को उस का किया भरपूर दिया जाएगा और

ع ٧ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ

उसे ख़ूब मा'लूम है जो वोह करते थे[149] और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ हांके जाएंगे[150] गुरौह गुरौह[151]

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उस के दरवाज़े खोले जाएंगे[152] और उस के दारोग़ा उन से कहेंगे क्या तुम्हारे पास

141 : येह पहले नफ़्ख़े का बयान है, इस नफ़्ख़े से जो बेहोशी तारी होगी उस का येह असर होगा कि मलाएका और ज़मीन वालों में से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे जिन पर मौत न आई होगी वोह इस से मर जाएंगे और जिन पर मौत वारिद हो चुकी फिर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हयात इनायत की वोह अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं जैसे कि अम्बिया व शुहदा उन पर इस नफ़्ख़े से बेहोशी की सी कैफ़िय्यत तारी होगी और जो लोग क़ब्रों में मरे पड़े हैं उन्हें इस नफ़्ख़े का शुऊ़र भी न होगा। (جمل وغیرہ) **142 :** इस इस्तिस्ना में कौन कौन दाख़िल है इस में मुफ़स्सिरीन के बहुत अक़्वाल हैं, हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि नफ़्ख़ए सइ़क़ से तमाम आस्मान और ज़मीन वाले मर जाएंगे सिवाए जिब्रील व मीकाईल व इसराफ़ील व मलकुल मौत के, फिर अल्लाह तआ़ला दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान जो चालीस बरस की मुद्दत है उस में इन फ़िरिश्तों को भी मौत देगा। **दूसरा** क़ौल येह है कि मुस्तस्ना शुहदा हैं जिन के लिये क़ुरआने मजीद में "بَلْ اَحْیَآءٌ" आया है। ह़दीस शरीफ़ में भी है कि वोह शुहदा हैं जो तलवारें ह़माइल किये गिर्दे अ़र्श ह़ाज़िर होंगे। **तीसरा** क़ौल ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मुस्तस्ना ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام हैं, चूं कि आप तूर पर बेहोश हो चुके हैं इस लिये इस नफ़्ख़े से आप बेहोश न होंगे, बल्कि आप मुतयक़्क़िज़ (बेदार) व होशियार रहेंगे। **चौथा** क़ौल येह है कि मुस्तस्ना जन्नत की हूरें और अ़र्श व कुरसी के रहने वाले हैं। ज़ुह्हाक का क़ौल है कि मुस्तस्ना रिज़्वान और हूरें और वोह फ़िरिश्ते जो जहन्नम पर मामूर हैं वोह और जहन्नम के सांप बिच्छू हैं। (تفسیر کبیر وجمل) **143 :** येह नफ़्ख़ए सानिया है जिस से मुर्दे ज़िन्दा किये जाएंगे। **144 :** अपनी क़ब्रों से और देखते हुए खड़े होने से या तो येह मुराद है कि वोह ह़ैरत में आ कर मब्हूत की तरह़ हर तरफ़ निगाहें उठा उठा कर देखेंगे या येह मा'ना हैं कि वोह येह देखते होंगे कि अब उन्हें क्या मुआ़मला पेश आएगा और मोमिनीन की क़ब्रों पर अल्लाह तआ़ला की रह़मत से सुवारियां ह़ाज़िर की जाएंगी जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने वा'दा फ़रमाया है : "یَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِیْنَ اِلَی الرَّحْمٰنِ وَفْدًا" **145 :** बहुत तेज़ रोशनी से यहां तक कि सुर्ख़ी की झलक नुमूदार होगी, येह ज़मीन दुन्या की ज़मीन न होगी बल्कि नई ही ज़मीन होगी जो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़ियामत की महफ़िल के लिये पैदा फ़रमाएगा। **146 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह चांद सूरज का नूर न होगा बल्कि येह और ही नूर होगा जिस को अल्लाह तआ़ला पैदा फ़रमाएगा इस से ज़मीन रोशन हो जाएगी। (جمل) **147 :** या'नी आ'माल की किताब, ह़िसाब के लिये इस से मुराद या तो लौह़े महफ़ूज़ है जिस में दुन्या के जमीअ़ अह़वाल क़ियामत तक शर्ह़ व बस्त के साथ सब्त हैं या हर शख़्स का आ'माल नामा जो उस के हाथ में होगा। **148 :** जो रसूलों की तब्लीग़ की गवाही देंगे। **149 :** उस से कुछ मख़्फ़ी नहीं न उस को शाहिद व कातिब की ह़ाजत, येह सब हुज्जत तमाम करने के लिये होंगे। (جمل) **150 :** सख़्ती के साथ क़ैदियों की तरह़। **151 :** हर हर जमाअ़त और उम्मत अ़लाह़दा अ़लाह़दा। **152 :** या'नी जहन्नम के सातों दरवाज़े खोले जाएंगे जो पहले से बन्द थे।

www.dawateislami.net

رُسُلٌ مِّنْكُمْ یَتْلُوْنَ عَلَیْكُمْ اٰیٰتِ رَبِّكُمْ وَ یُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ

तुम्हीं में से वोह रसूल न आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन के मिलने से डराते

هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ لٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ ﴿۷۱﴾ قِیْلَ

थे कहेंगे क्यूं नहीं[153] मगर अ़ज़ाब का क़ौल काफ़िरों पर ठीक उतरा[154] फ़रमाया जाएगा

ادْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِیْنَ ﴿۷۲﴾

दाखि़ल हो जहन्नम के दरवाज़ों में उस में हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना मुतकब्बिरों का

وَ سِیْقَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْهَا وَ

और जो अपने रब से डरते थे उन की सुवारियां[155] गुरौह गुरौह जन्नत की त़रफ़ चलाई जाएंगी यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे और

فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَ قَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا

उस के दरवाज़े खुले होंगे[156] और उस के दारोग़ा उन से कहेंगे सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ

خٰلِدِیْنَ ﴿۷۳﴾ وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَ اَوْرَثَنَا

हमेशा रहने और वोह कहेंगे सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का

الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَیْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِیْنَ ﴿۷۴﴾ وَ

वारिस किया कि हम जन्नत में रहें जहां चाहें तो क्या ही अच्छा सवाब कामियों का[157] और

تَرَى الْمَلٰٓىِٕكَةَ حَآفِّیْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ یُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ

तुम फ़िरिश्तों को देखोगे अ़र्श के आस पास हल्क़ा किये अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते

وَ قُضِیَ بَیْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَ قِیْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۷۵﴾ ع

और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा[158] और कहा जाएगा कि सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहान का रब[159]

153 : बेशक अम्बिया तशरीफ़ भी लाए और उन्हों ने अल्लाह तआ़ला के अह़काम भी सुनाए और इस दिन से भी डराया। **154 :** कि हम पर हमारी बद नसीबी ग़ालिब हुई और हम ने गुमराही इख़्तियार की और ह़स्बे इर्शादे इलाही जहन्नम में भरे गए। **155 :** इ़ज़्ज़तो एह़तिराम और लुत़्फ़ो करम के साथ **156 :** उन की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के लिये और जन्नत के दरवाज़े आठ हैं। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि दरवाज़ए जन्नत के क़रीब एक दरख़्त है उस के नीचे से दो चश्मे निकलते हैं, मोमिन वहां पहुंच कर एक चश्मे में ग़ुस्ल करेगा इस से उस का जिस्म पाको साफ़ हो जाएगा और दूसरे चश्मे का पानी पियेगा इस से उस का बात़िन पाकीज़ा हो जाएगा, फिर फ़िरिश्ते दरवाज़ए जन्नत पर इस्तिक़्बाल करेंगे। **157 :** या'नी अल्लाह और रसूल की इत़ाअ़त करने वालों का। **158 :** कि मोमिनों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाखि़ल किया जाएगा। **159 :** अहले जन्नत जन्नत में दाखि़ल हो कर अदाए शुक्र के लिये ह़म्दे इलाही अ़र्ज़ करेंगे।